

● गाओ और समझो :

५. एक चपाती

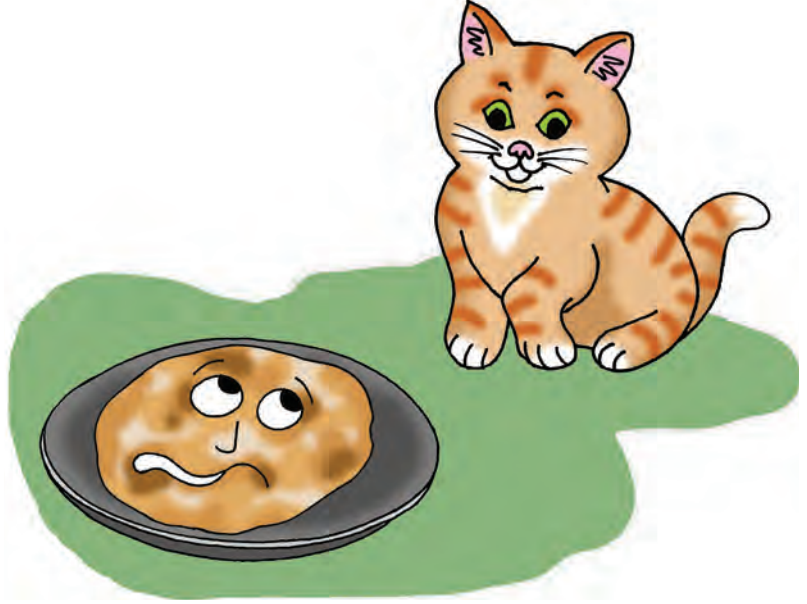
-रमेश तैलंग

जन्म : २ जून १९४६, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश) रचनाएँ : हिंदी के नए बालगीत उड़न खटोले, एक चपाती और अन्य बालकविताएँ आदि ।

परिचय : आप १९६५ से प्रमुख राष्ट्रीय दैनिकों में लेखन कर रहे हैं ।

इस कविता में चपाती और बिल्ली के बीच घटी मजेदार घटना को हास्य रूप में व्यक्त किया है ।

ताती-ताती एक चपाती
दिखी तवे पर पेट फुलाती
बिल्ली मौसी बोली-“म्याऊँ !
भूख लगी, मैं तुझको खाऊँ ।”
सुनकर उछली दूर चपाती,
बोली फिर आँखें मटकाती-
“मौसी पहले मक्खन ला ।
फिर चाहे मुझको खा जा ।”
देख चपाती की ठनगन,
बिल्ली ले आई मक्खन ।
गुराकर फिर बोली-“म्याऊँ !
अब तो मैं तुझको खा जाऊँ ?”
सुनकर उछली दूर चपाती,
बोली फिर आँखें मटकाती-



“हाँ, हाँ, पहले गुड़ तो ला ।
फिर चाहे मुझको खा जा ।”
बिल्ली चल दी गुड़ लाने ।
लगी लौटकर झुंझलाने ।
“म्याऊँ ! म्याऊँ ! म्याऊँ !
अब मैं खाऊँ । अब मैं खाऊँ”
मन ही मन में गढ़ी चपाती,
सोचा-‘अब तो मरी चपाती ।’
चिढ़कर बोली-‘खा नकटी ।’
बिल्ली गुस्से में झपटी ।
कमरे में आते ही माँ के,
बिल्ली भागी दुम दबा के
आँख खोल चपाती मुस्काई,
माँ ने उसकी जान बचाई ।



□ विद्यार्थियों से एकल एवं सामूहिक कविता पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से बिल्ली और चपाती के बीच हुए संवादों को स्पष्ट करें । उन्हें बाल-जगत से संबंधित अन्य किसी कल्पना के प्रति बाल मनोभाव व्यक्त करके प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें ।